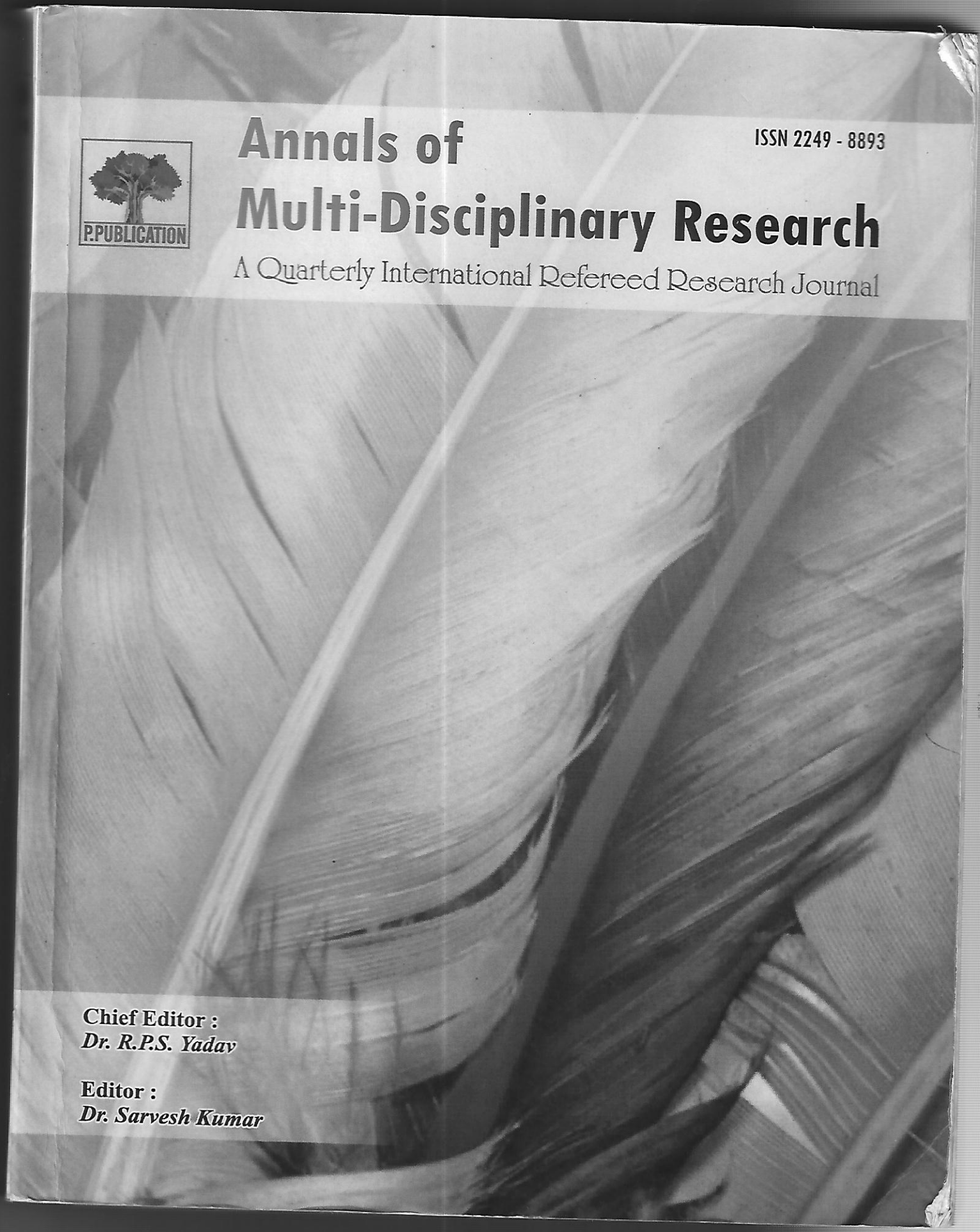

P.PUBLICATION

ISSN 2249 - 8893

Annals of Multi-Disciplinary Research

A Quarterly International Refereed Research Journal

Chief Editor :
Dr. R.P.S. Yadav

Editor :
Dr. Sarvesh Kumar

CONTENTS

- **An Introduction to Tridosh & Triguna** 1-4
  Dr. Pravin Misra, Assistant Professor, Department of Kriya Sharir, Shri Krishna Ayurvedic Medical College, Varanasi
- **Workers 'Participation in Management : "Experiment and Achievement in Foreign Countries"** 5-10
  Dr. Mahendra Prasad Singh, Asst. Professor, Deptt. Of Commerce, ABRPG College, Anpara, Sonebhadra (U.P.)
- **Human Trafficking in North East India** 11-15
  Pratyashi Saikia Tandon, Research Scholar, Department of Sociology, Banaras Hindu University, Varanasi
- **A Complex Web of Russian Energy Market** 16-19
  Dr. Nagesh Kumar Ojha, CR & CAS, School of International Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi-110067
- **A Blighted Life: Khusrau Mirza** 20-22
  Sugandha Rawat, Research Scholar, Mewar University Chittorgarh (Raj.)
- **The Institutional Development of the Siddha Tradition and Practices in Early Medieval Bihar** 23-28
  Shishir Kumar Mishra, Research Scholar (Ph.D), Delhi University
- **Material Culture of Rakhigarhi (Hissar, Haryana) – An Overview** 29-35
  Arti Chowdhary, Research Scholar, Department of AIHC & Archaeology, BHU, Varanasi
- **Intergroup Relations** 36-41
  Rajat Tiwari, Research Scholar, Department of Psychology, BHU, Varanasi
  Dr. Shabana Bano, Assistant Professor, Department of Psychology, BHU, Varanasi
- **Tribal communities and Patterns of Migration in Bundelkhand Region** 42-44
  Dr. Anamika Singh, DR/G-2, Tulsidas Colony, BHU, Varanasi
- **Peace Ecology : Deep Solutions in an Age of Water Scarcity** 45-49
  Kundan Kumar, Persuing Ph.D. Department of Political Science, University of Delhi.
- **Analysis of the Rights of A Child of A Legitimate and Illegitimate Origin** 50-54
  Miss Akshaya Shukla, Research Scholar and Guest Faculty, Faculty of Law, JNVU, Jodhpur (Raj).
- **Looking Back to The Economic Reforms in India – 1991 (LPG Model)** 55-68
  Varun Panwar, Assistant Professor, Department of Commerce, Shyam Lal College, University of Delhi.
  Nartam Vivekanand Motiram, Assistant Professor, Department of Political Science, Shyam Lal College, University of Delhi.

- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश : आवश्यकता एवं प्रभाव — 263-265
  चन्द्र प्रकाश राय, एसोसियेट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र, डी.सी.एस.के. (पी.जी.) कॉलेज मऊ।
- कृषि क्षेत्र : बढ़ते कर्ज की समस्या — 266-269
  डॉ. सिद्धार्थ पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, बी.एन.के.बी.पी.जी. कालेज अकबरपुर, अम्बेडकर नगर
- प्रगतिवादी काव्य में विद्रोही स्वर — 270-275
  डॉ. मदन मोहन पाण्डेय, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री शिवा स्नातकोत्तर महाविद्यालय तेरही, कप्तानगंज, आजमगढ़।
- विवेकानन्द का सामाजिक चिन्तन — 276-279
  डॉ. अर्चना पाठक, एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, बी.एन.के.बी.पी.जी. कालेज, अकबरपुर अम्बेडकरनगर
- गाजीपुर जनपद की सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का अध्ययन — 280-285
  डॉ. मनोज कुमार सिंह, एसोशिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर, उ.प्र.
- शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन — 286-287
  डॉ. सुनीता त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग, के. बी. पी. जी. कालेज, मिर्जापुर
- निरस्त्रीकरण के मार्ग में बाधाएँ — 288-291
  डॉ. देवरूप तिवारी, एसोसिएट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन, गाँधी स्मारक त्रिवेणी पी.जी. कालेज, बरदह, आज़मगढ़ (उ.प्र.)
- कंठ साधना (रियाज़) का महत्व — 292-293
  ऋतिका त्रिपाठी, गायन विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- निःशक्तता वाले बच्चों की शिक्षा में माता-पिता और समुदाय की भूमिका — 294-298
  मीना कुमारी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)
- **Co Branding** — 299-304
  Maj P.K. Panday, Associate Professor, Shri Harishchandra P.G. College, Varanasi
- **State of Democracy in India** — 305-309
  Shri Azad Yadav. Assistant Professor (Guest Faculty), Department of Teacher Education, Shibli National P G College Azamgarh.
- **Sensitizing Teachers for Human Rights** — 310-315
  Manish Kumar Gautam, Junior Research Fellow, Faculty of Education (K), Banaras Hindu University, Varanasi-221010
- **Secularism and Constitution of India** — 316-320
  Dr. Nemichand, Guest Faculty, Faculty of Law, JNVU, Jodhpur
- पौराणिक परम्परा में सृष्टि एवं प्रलय सम्बन्धी अवधारणा — 321-324
  कुँवर धनंजय विक्रम सिंह, शोध छात्र, प्रा.भा. इ. सं. एवं पुरातत्त्व विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी।

निःशक्तता वाले बच्चों की शिक्षा में माता–पिता और समुदाय की भूमिका

मीना कुमारी

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई होती है। इसके सभी सदस्य एक दूसरे पर आश्रित होते है। परिवार के उद्देश्यों को पूरा करने में परिवार के सदस्य एक दूसरे की सहायता करते रहते है। अतः परिवार में निःशक्त बच्चे के पैदा होने पर उसकी देखभाल की जिम्मेदारी भी परिवार के सदस्यों की ही बनती है।

किंतु जैसे ही परिवार में एक निःशक्त बच्चे का जन्म होता है उस परिवार में अचानक बहुत सी समस्याएं जन्म ले लेती है। ये समस्याएं परिवार के लिये नई होती है। जिससे तत्काल उबर पाना परिवार के लिये सम्भव नहीं होता है। बच्चे के माता–पिता बच्चे के जन्म को लेकर जो भी सुनहरा सपना पाल रखे थे। वह निःशक्त बच्चों के जन्म के साथ एक ही झटके में चकनाचूर हो गया। ऐसी स्थिति में निःशक्त बच्चें के माता–पिता की स्थिति में व्यापक बदलाव दिखाई देने लगता है।

ऐसे बच्चे के पैदा होते ही माता–पिता शोक की स्थिति में चले जाते है। उनके अंदर गहरी निराशा घर बना लेती है। वे मानने लगते है कि बच्चे का न होना ही निःशक्त बच्चे के पैदा होने से बेहतर है। वे बच्चे को बोझ मानकर चलने लगते है और उसके भविष्य के लेकर अविराम चिंता की स्थिति में चले जाते है। ऐसे बच्चे के पैदा होते ही माता–पिता की पहली प्रतिक्रिया में अस्वीकार की भावना देखी जाती है। ऐसे में माता–पिता सोचते है कि यह बच्चा उनका है ही नहीं, या जैसा सोचा था वैसा बच्चा पैदा क्यों नहीं हुआ। निःशक्त बच्चा पैदा होने की स्थिति में माता–पिता एक दूसरे के ऊपर दोषारोपण करते नजर आते है और कभी कभी तो विवाद इतना जटिल हो जाता है कि माता–पिता में अलगाव की नौबत आ जाती है। इस बच्चे के पैदा होते ही माता–पिता अपने आप को अपराधी मानने लगते है और इसे अपने पूर्वजन्म का पाप समझते है। निःशक्त बच्चे के पैदा हो जाने पर माता–पिता दूसरे बच्चे के प्रति भी आशंकित रहते है। कई बार ऐसे माता–पिता भी मिलते है जो पहले निःशक्त बच्चे के जन्म से इतना डर जाते है कि दूसरे बच्चे को न पैदा करने का निर्णय ले लेते है। इन स्थितियों से गुजरते–गुजरते निःशक्त बच्चे के माता–पिता शर्म महसूस करने लगते है। वे समाज से दूरी बना लेते है। उन्हें सदा इस बात का भय रहता है कि निःशक्त बच्चे के कारण समाज में उनका मजाक उड़ाया जायेगा। निःशक्त बच्चे को लेकर दूसरे लोगों द्वारा अत्यधिक सुझाव आने के कारण भी अभिभावक लोगों से मिलने में कतराने लगते है। वे धीरे–धीरे अपना सामाजिक दायरा कम कर देते है। अतः एक स्थिति ऐसी भी आ जाती है कि निःशक्त बच्चे के माता–पिता और अभिभावक किसी भी पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाना पसंद नहीं करते है और धीरे–धीरे सामाजिक बहिस्कार के शिकार हो जाते है।

एक निःशक्त बच्चे के जन्म से परिवार में कई प्रकार की नई परिस्थितयां पैदा हो जाती है। जो परिवार सामान्य जीवन जीने का अभ्यस्त है उसे उस बच्चे की जीवन शैली के बारे में सोचना पड़ता है जो सामान्य रुप से कार्य व्यवहार नहीं कर सकता। बच्चे के लालन–पालन की प्रक्रिया, सामाजिक शैली, परिवेश के स्वरुप आदि के बारे में उनकी शंकाएं स्वाभाविक हैं जो माता–पिता को चिंता में डाल देती है। आरंभिक सदमें के बाद माता–पिता वास्तविकता को स्वीकार करने से इनकार करते है। धीरे–धीरे ही उदासी का स्थान एक स्वीकृति लेती है। माता–पिता देखते है कि अन्य बच्चे बगीचे में स्वतंत्र रुप से खेल रहे हैं और वे जानते है कि उनका अपना बच्चा कभी उनके साथ नहीं खेल पायेगा। ये उनके लिये तनाव तथा दुख के क्षण होते हैं जिनका सामना माता–पिता को बार–बार करना पड़ता है। डर, आशंका और बच्चे की क्षमताओं पर भरोसा न होने के कारण अतिरक्षण किया जाता है। कई बार माता–पिता एक विशेष बच्चा होने के कारण शर्मिंदगी महसूस करते है, उसे

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर (स्पेशल एजुकेशन), गुरू घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)